www.thearyasamaj.org

वर्ष-१३ अंक-७
२७ मार्च २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

www.thearyasamaj.org

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१३ अंक-७

२७ मार्च २०१७
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११५
विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	भगवाकरण का फैलाया भ्रम	4
2.	जिज्ञासा एवं समाधान	8
4.	व्यक्तित्व विकास	10
5.	दूरदर्शिता	12
6.	सन्यासी	13
9.	स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारूप	14
10.	बजट	16
11.	कविता	18
12.	वर्ष प्रतिपदा, नवसंवत्सर, आर्य समाज	20
13.	वैदिक संस्कारों हेतु पंडित राजगुरू शर्मा	23
14.	श्री सुरेश शास्त्री, सुरेश आर्य, विनोद आर्य	24
15.	विचार टी.वी.फाउण्डेशन द्वारा टी.वी.स्क्रीन	25

अप्रैल माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

- गुहराज निषाद जयंती 1
- सम्राट अशोक मौर्य जयंती 4
- राम नवमी 5
- डॉ. हेनीमेन जयंती, गुरू हरकिशन जयंती 10
- जलियांवाला बागदिवस, वैशाखी 13
- डॉ.अम्बेडकर जयंती, अग्निशमन (निरोध) दिवस 14
- गुरू तेगबहादुर जयंती 16
- गुरू अर्जुनदेव जयंती 18
- विश्व पृथ्वी दिवस 22
- गुरू अंगददेव जयंती 27
- छत्रपति शिवाजी जयंती 28
- परशुराम जयंती 29

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय :

भगवाकरण का फैलाया भ्रम

पिछले 2 दशकों से भगवाकरण भगवाकरण का प्रचार कर एक साम्प्रदायिक शब्द बनाया जा रहा हैं। यह अनैतिक और अप्रासगिंक टिप्पणी निज स्वार्थ में राजनैतिक लाभ की भावना से अधिक प्रसारित की जा रही हैं। भगवा ध्वज भगवावस्त्र को साम्प्रदायिक चिन्ह मानकर जन मानस के मनों मे इसके प्रति कटुता, वैमनस्यता फैलायी जा रही है। जबकि वास्तव में यदि सम्प्रदाय, मजहब, पन्तो, से उपर कोई विचार धारा है तो वह इसी भगवाध्वज के अनुयायियों में हैं।

भगवारंग हम कहने लगे वास्तव में यह अरूण रंग कहलाता था जिस प्रकार सूर्य की लालिमा उदय और अस्त होते समय होती है यह वही रंग था। सनातन धर्म मे इसी रंग को श्रेष्ठ मान कर ध्वज के रूप में इसे सम्मान दिया। कोई भी रंग या ध्वज किसी संगठन जाति, देश का प्रतीक बन चुका है। जिस प्रकार का ध्वज होगा उसके अनुसार ही उस संगठन के आदर्श मान्यता और जीवन शैली का अनुमान लगाया जा सकता हैं। यदि उस ध्वज के पीछे छिपे दर्शन को नहीं समझ पाये तो फिर इसके विपरीत तरह–तरह के अनुमान लगाये जाना सभंव होता हैं।

भगवा ध्वज या भगवे रंग के सबन्ध भी कुछ ऐसी ही असत्य मान्यता प्रचिलित कर दी गई हैं जिससे समाज मे गलत संदेश जा रहा हैं। भगवारंग त्याग का विस्तार का पवित्रता का संदेश देता हैं। ये रंग अग्नि का रंग है अग्नि अपने सपर्क मे किसी वस्तु के आने पर उसे निर्मल करके कई गुना बढ़ा कर लौटाती हैं।

इससे कोई भी सीधा अनुमान यह लगा सकता है कि इस अरूण (भगवा) रंग के ध्वज का अनुयायी सनातन धर्मी हैं। ये सनातन शब्द क्या हैं– दुर्भाग्य से सनातन शब्द को भी जाति, सम्प्रदाय, देश भाषा के साथ जोड़ कर देखा जा रहा हैं। जैसे हिन्दू मुसलमान ईसाई आदि आदि सम्प्रदाय माने जा रहे है वैसे ही सनातन शब्द को भी इसी श्रेणी मे माना जा रहा है। यह बिलकुल असत्य व अज्ञानता के कारण ये मान्यता प्रचिलित हो गई हैं।

सनातन एक समय से सबंध रखने वाला शब्द है जिसका अर्थ जो सदा रहे, अर्थात जिसका न आदि है और न अन्त है जो सदा खड़ा रहे वह सनातन हैं। तीन बातों को सनातन कहा गया ईश्वर, प्रकृति और जीवात्मा ये तीनों सत्ताये सनातन है क्यों कि ये कभी नष्ट नहीं होती अपितु सदा रहती हैं इनके अस्तित्व में बने रहने का समय सनातन हैं।

लगभग 2 अरब वर्ष हो चुके हैं पहले यह जानकरी महर्षि दयानंद ने अपनी प्रमुख पुस्तक ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका एवं सत्यार्थ प्रकाश में दी थी। किन्तु अब तो कई वैज्ञानिकों ने अनुसंधान के आधार पर इसे सिद्ध किया है। इतनी पुरानी मानव जाति है – इतना ही पुराना धर्म हैं क्योकि बिना धर्म के तो मनुष्य मनुष्य ही नहीं रह सकता यह धर्म ही समस्त मानव समाज का एक संविधान हैं।

www.thearyasamaj.org

परमात्मा ने इस संसार मे आकर रहने हेतु जीवन व्यवस्था, प्रदान की साथ ही मानवीय रिश्ते, जल, थल, नभ, वनस्पति, ज्ञान, विज्ञान का, समस्त पदार्थो का ज्ञान हमारे कर्तव्यो व अधिकारों का बोध भी करवाकर यह धर्म रूपी संविधान मानव मात्र के लिए संविधान है यही धर्म हैं। जब यह ज्ञान प्राप्त हुआ था उस समय हिन्दू मुसलमान ईसाई जैन, सिक्ख, बौद्ध, भारत पाकिस्तानी, अमेरिकी, जापानी आदि का कोई अस्तित्व नहीं था।

दुनिया का ईकरंगी आलम आम था।
पहले एक कौम थी, इंसान जिसका नाम था।।

उस समय प्राप्त ज्ञान जो धर्म कहलाता है वह बिना किसी भेद भाव के मनुष्य मात्र के लिए दिया गया था। जिसमे **सर्वे भवन्तु सुखिनः** का **वसुदेव कुटुम्बकम** की पवित्र भावना का संदेश हैं। स्वंय की नहीं अपितु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति को मानने का उपदेश है। सभी दिशाओं मे मित्र हो, **"सर्व आशा मम मित्रं भवन्तु"** कोई दुश्मन न हो यदि कोई दुश्मन हो भी तो उसको परमात्मा उचित व्यवस्था करे।

यह भाव सनातन धर्म मे हैं। अपने को जो उचित लगता है वैसा ही अच्छा व्यवहार दूसरों से करे और जो व्यवहार हमे अपने लिए अच्छा नहीं लगता वैसा व्यवहार दूसरो से न करें। यह शिक्षा सनातन धर्म ही देता हैं।

भगवा ध्वज जिन पवित्र विचारों को देता है वह सनातन धर्म ही शाश्वत है, पूर्ण है, सबके लिए है सदा के लिए है, निष्पक्ष है, तथा यही विश्व की पहली संस्कृति हैं। धर्म की कसौटी के लिए चार बाते होना आवश्यक है पहली समानता, दूसरी वैश्विक बन्धुत्व भाव, तीसरा सबकि उन्नित का भाव और चौथा है वैज्ञानिक धरातल में समस्त बाते केवल केवल ईश्वरीय सनातन धर्म मे ही पायी जाती हैं।

आज महापुरूषों के जीवन या संदेश पर आधारित विचारधारा जो सम्प्रदाय, मजहब, मतमतान्तर की श्रेणी मे आते उसके पीछे समाज दौड़ रहा हैं। आज समाज की सुख, शान्ती, सुरक्षा की क्षति का कारण धर्म के स्थान पर सम्प्रदायवाद का बढ़ता दायरा हैं।

भगवाकरण तो मानव मानव के मध्य स्नेह, प्रेम और संगठन को स्थापित करता हैं। जाति–सम्प्रदाय, देश भाषा से उपर उठकर समस्त विश्व के लिए सबकि उन्नति के लिए है। किसी प्रकार की संकीर्णता का भाव नहीं रखता हैं।

भगवा वस्त्र हमारे सन्यासी भी धारण करते हैं ये रंग त्याग और जितेन्द्रीय का प्रतीक हैं। इसे धारण करने का अर्थ सांसारिक भोग विलास व येषणाओं को त्याग कर समस्त संसार को अपना मानते हुए परोपकार और प्रभु शरण मे जीवन अर्पित करना हैं। सन्यासी वही है जो किसी से द्वेष न रखे न कोई चाह रखे गीता मे कहां –

www.thearyasamaj.org

ज्ञेयः स नित्य सन्यासी यो न द्वेष्टा।
न कांछति।।

इसलिए भगवाकरण जो धर्म का प्रतीक है वही मनुष्य को श्रेष्ठ मनुष्य बनाने का सबका भला करने का संदेश देता हैं। मन वचन कर्म से हिंसा न करने का उपदेश देता हैं। भगवाकरण संख्या बढ़ाने का आंदोलन नहीं है जैसा कि विभिन्न सम्प्रदायों के द्वारा हो रहा हैं। किसी की इच्छा के विरूद्ध किसी मान्यता को मनवाना पाप मानता है।

भगवकरण मे नारी सम्मान की पराकाष्ठा है। केवल सनातन संस्कृति ही वह संस्कृति है जहां नारि जाति को आदर पूर्वक स्थान दिया गया हैं। कहा गया है **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"** इसी संस्कृति मे एक राष्ट्र नायक छत्रपति शिवाजी भी हुए। अक्टूबर 1967 बीजापुर गवर्नर मुल्ला एहमद की पुत्र वधू थी। इसका एक उदाहरण यही है कि मराठा सरदार आबाजी सोनदेव ने शिवाजी को नजराने के तौर पर मुल्ला एहमद की पुत्र वधू को लेकर आए और यह सोच कर उसे शिवाजी को तोहफे नजराने के रूप में सौंपा, कि अत्यन्त खूब सूरत नवयुवति गौहर बानू को पाकर शिवाजी प्रसन्न हो जावेगें। परन्तु शिवाजी ने इस अनैतिक कार्य के लिए उन सबको बहुत डाटा उन पर नाराज हुए। और एहमद की पुत्र वधू को मां शिवा कहकर संबोधित किया। जरा विचार करे दूसरे सम्प्रदाय मे क्या यह संभव था ? कदापि नहीं। इस स्थान पर अन्य सम्प्रदाय जो भगवाकरण के विरोधी है उन पर भी नजर डालना चाहिए। वहां नारि जाति को क्या स्थान दिया कितना अत्याचार उन पर हुआ जहां हजारों महिलाओं को अपनी अस्मत बचाने व दरिन्दो से बचने के लिए जौहर (अग्नि में कूदकर) जीवन का अन्त करना पड़ता है। नैतिकता की हदे तोड़ते हूए अपने ही परिवार में मात्र अपनी हवस मिटाने के लिए अनेक बादशाहों ने धर्म के ठेकेदारों ने अनेक महिलाओं के साथ दुष्कर्म किए ये भगवाकरण की विरोधी नीती भगवाकरण की विरोधी नीति हैं।

भगवाकरण के ही अनुयायी मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम, भगवान कृष्ण, हुए सीता अपहरण में कान के आभूषण दिखाते हुए श्री राम ने लक्ष्मण से उन्हे पहचानने का प्रश्न किया तो लक्ष्मण का उत्तर था भैया मै कानों के नहीं पैरो की बिछिया पहचानता हूं ये संस्कार कहां मिलेगे ? भगवाकरण ऐसी किसी शर्मनाक घटनाओ को कोई स्थान नहीं है इसे पाप माना जाता है दूसरी ओर इसे धर्म का नाम माना जाता हैं।

ये सनातन धर्म का भगवा ध्वज ही हमे ऐसी प्रेरणा दे सकता हैं। आज भगवाकरण को निज स्वार्थ मे साम्प्रदायिक विचारधारा को जोड़ने का पाप कुछ राजनैतिक दल कर रहे हैं। इसलिए इनके स्वार्थ के मिले जहर से समाज को बचाना चाहिए।

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रीय प्रेरणा का स्त्रोत भगवाकरण

सनातन संस्कृति का ही प्रभाव था जिसके कारण मर्यादापुरूषोत्तम श्री राम को लंका का राज्य प्राप्त जब करने का जब प्रस्ताव रखा तो श्री राम ने मातृभूमि को स्वर्ग से अधिक महत्व देते हुए कहा "जननि जन्म भूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी" इसी भगवाकरण के आदि ज्ञान स्त्रोत वेद में मातृभूमि के लिए कहा **माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः** । ये भूमि मेरी माता है और मै इसका पुत्र हूं। इतना ही नहीं सनातन धर्म का वैदिक संदेश हैं **"वयं बलहृतः स्याम"** मै मातृभूमि के लिए बलिदानी बनू किस सस्कृति में यह प्रेरणा मात भूमि के लिए मिलती हैं। यह महान विचार इस भगवाकरण मे ही मिलती है इसलिए भी भगवाकरण देश हित मे हैं।

भगवाकरण की संस्कृति कहती है संसार के व्यक्ति स्वंय मनुष्य बने और श्रेष्ठ बनावें। सनातन धर्म का स्त्रोत वेद कहता है **"मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।।"** अन्य विचार धारा सम्प्रदाय की संख्या बढ़ाने के प्रयास करती है साम्प्रदायिक बनाती है।

एक ओर धर्म परिवर्तन के लिए नर संहार धोखा और अनेक षड़यन्त्र रचे जा रहे है इच्छा के विपरीत जबरन उनपर अपनी विचार धारा थोपी जा रही हैं। शारिरिक व मानसिक यातना देने को धर्म कहा जा रहा हैं इसके विपरीत भगवाकरण की मान्यता कहती है **आत्मनः प्रति कूलानीपरेषां न समाचरेत।** अर्थात जो मानव स्वभाव का हितकर विचार व्यवहार हमे अच्छा लगता है वैसा ही अच्छा व्यवहार हम दूसरों से करे तथा जो व्यवहार हमे किसी के द्वारा किया जाना अच्छा नहीं लगता वह हम दूसरो से भी न करें।

इस प्रकार मानव कल्याण की न केवल मानव की अपितु सभी प्राणियों के कल्याण का सन्देश सनातन धर्म तथा कथित भगवाकरण विचार धारा में हैं। सभी प्राणियों को मित्र भाव से तथा सभी हमे मित्र भाव से देखे यह सन्देश सनातन धर्म देता है कहा गया **"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे"**

विचार करे वे सज्जन जो भगवाकरण को समाज विरोधी और साम्प्रदायिक चश्मे से स्वार्थ मे देख कर इसका विरोध करते हैं। यदि संस्कार और संस्क ति रक्षक होना पाप है और साम्प्रदायिक विचारों का प्रचार प्रसार यदि उचित है, तो वह दिन दूर नहीं जब सम्पत्ती परिवार, और धर्म से जबरन बेदखल होकर अमानुषता के वातावरण में जीना होगा।

इसलिए मेरा उन महानुभावो से विनम्र अनुरोध है भगवा रंग साम्प्रदायिक नहीं अपितु विश्व की पहली, सनातन संस्कृति का संदेश देने वाला है। जिसमें जियो और जीने दो स्वयम् सुखी रहो और ओरो को भी सुखी बनावें स्वयम् श्रेष्ठ बनो दूसरों को भी श्रेष्ठ बनाओं का संदेश हैं। जिसमे वर्ग भेद, साम्प्रदायिकता को कोई स्थान नहीं समय काल देश से बंधा नहीं सबके लिए हैं अपितु बसुधेव कुटुम्बकम का संदेश हैं, यही विचार. भगवाकरण का है। निज स्वार्थ मे इसकी पवित्रता पर कीचड़ उछाला जाना घोर पाप है।

www.thearyasamaj.org

जिज्ञासा एवं समाधान

– आचार्य ज्ञानेश्वार्य, रोजड

प्रश्न 489 : विद्यार्थी और अध्यापक को पाठ आरम्भ करते समय कौन से मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए ? उसका अर्थ बताइए।

उत्तर : ओ3म् सहनाववतु सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ओ3म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

ओ3म् सहनाववतु – हे ईश्वर हम (गुरू शिष्य) दोनों मिलकर एक दूसरे की रक्षा करें। **सह नौ भुनक्तु** – मिलकर सांसारिक व पारलौकिक सुख भोगें। सह वीर्यं करवावहै – हम मिलकर बल, श्रद्धा, प्रेम, यश बढ़ायें। **तेजस्विनाव धीतमस्तु** – जो ज्ञान–विज्ञान सुनते, लिखते, पढ़ते उसे सीमित न रखें, सारे संसार में बढ़ाये। **मा विद्विषावहै** – हममें द्वेष कटुता न आये। ओ3म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः – हम त्रिविध ताप से मुक्त हों।

प्रश्न 490 : आदर्श विद्यार्थी के कुछ गुण इस प्रकार है – रात को जल्दी सोना और प्रातः जल्दी (सूर्योदय के पूर्व) उठना, नियमित आसन–व्यायाम, भ्रमण (कसरत) करना, गायत्री आदि मन्त्रों के माध्यम से ईश्वर का ध्यान करना, माता–पिता, गुरूजनों आदि का सम्मान आज्ञापालन करना, कुसंगति से दूर रहते हुए स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, श्रम (पुरूषार्थ) एवं सदाचार को जीवन का अंग बनाना।

प्रश्न 491 : शास्त्र में विद्यार्थी के कितने लक्षण बताए हैं स्प ट करो ?

उत्तर : शास्त्र में विद्यार्थी के पांच लक्षण बतलाए है – (1) विद्यार्थी के कौए की तरह हर समय सजग सावधान रहना चाहिए। (2) विद्यार्थी को बगुले की तरह एकाग्र चित्त होना चाहिए। (3) विद्यार्थी को कुत्ते की तरह सतर्क होकर सोना चाहिए। (4) विद्यार्थी को शुद्ध, सात्विक, संयमित भोजन करना चाहिए। (5) विद्यार्थी को गृहस्थ के बन्धनों से मुक्त होना चाहिए।

प्रश्न 492 : शास्त्र में विद्यार्थी को कितने वर्ष तक विद्या अध्ययन करने की छूट दी गई है ?

उत्तर : शास्त्र में विद्यार्थी को 48 वर्ष तक अध्ययन करने की छूट दी गई है।

प्रश्न 493 : विद्यार्थी को किन से दूर रहना – बचना चाहिए ?

उत्तर : विद्यार्थी को भोग–विलास, आलस्य, प्रमाद, मांसाहार–व्यभिचार, चंचलता, काम–क्रोध आदि दुर्गुणों, दुर्व्यसनों से बचना चाहिए।

प्रश्न 494 : विद्या अर्जन करने की सर्वोत्तम पद्धति क्या है ?

उत्तर : विद्या–अर्जन करते समय विद्यार्थी को अध्यापक की ऑखों से ऑख मिलाते हुए अपनी कर्णेन्द्रिय को अध्यापक के उपदेश को ध्यान पूर्वक सुनने में लगाना चाहिए तथा अपने कर्णेन्द्रिय को मन से एवं मन को आत्मा से संयुक्त करते हुए विद्या अर्जन करना चाहिए।

www.thearyasamaj.org

प्रश्न 495 : शतरंज, कैरम, आदि और आजकल जो विडियोगेम और कम्प्यूटर तथा मोबाईल आदि में विविध खेल उपलब्ध हैं तो क्या इन खेलों से विद्यार्थी का पूर्ण विकास हो पाएगा ?

उत्तर : जी नहीं, विद्यार्थी अवस्था में खेल–कूद, आसन–व्यायाम करना चाहिए। इससे शारीरिक शक्ति, पाचन शक्ति तथा स्फूर्ति, ताजगी में वृद्धि होती है। आसन–व्यायाम, खेलकूद भी इस प्रकार करना चाहिए कि उनसे पर्याप्त पसीना निकले। किन्तु विद्या अध्ययन छोड़कर हर समय खूलकूद आदि नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 496 : जीवन में प्रगति हेतु दोषों के विषय में कैसी सोच रखनी चाहिए ?

उत्तर : जीवन में प्रगति हेतु अपने दोषों को सतत देखते रहना चाहिए और उससे संघर्ष करके दूर करना चाहिए, उनसे कोई समझौता नहीं करना चाहिए। औरों के (अन्य व्यक्तियों के) दोषों के प्रति ध्यान नहीं देना चाहिए।

प्रश्न 497 : दोष बताए जाने पर कैसे वर्तना चाहिए ?

उत्तर : दोष बताए जाने पर धैर्यतापूर्वक सुनना चाहिए। अपने दोषों को स्वीकार करके उन्हें दूर करना चाहिए। अपने दोष दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिए।

प्रश्न 498 : जो दोष हममें नहीं हो और मिथ्या आरोप लगाये जाएं तो क्या करें ?

उत्तर : ऐसे मिथ्या आरोपों के विषय में चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्रोधित नहीं होना चाहिए और सहनशक्ति को बनाए रखना चाहिए। आवश्यकता होने पर बाद में स्पष्टिकरण कर देना चाहिए।

प्रश्न 499 : गुरूकुल शिक्षा प्रणाली क्या होती है ?

उत्तर : घर में न रहकर गुरू के अधीन रहते हुए ब्रह्मचर्य पूर्वक त्याग, तपस्या युक्त जीवन यापन करते हुए विद्या अर्जन करना गुरूकुल शिक्षा प्रणाली हैं।

प्रश्न 500 : क्या गुरूकुल पद्धति मे अमीर गरीब सभी बच्चों का प्रवेश हो सकता है, तथा इसकी आयु कितनी होनी चाहिए ?

उत्तर : हॉ, गुरूकुलों में अमीर हो या गरीब हो सभी के बच्चों का प्रवेश हो सकता है। इसकी आयु सामान्यतः छः वर्ष होती है। अपवाद स्वरूप कुछ गुरूकुलों में बड़ी अवस्था के विद्यार्थी भी प्रवेश लेते हैं।

प्रश्न 501 : क्या गुरूकुल में अमीर गरीब का भेदभाव होता है ?

उत्तर : नहीं, गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में अमीर गरीब का कोई भेदभाव नहीं होता है। अपितु सबको समान वस्त्र, भोजन, स्थान आदि दिया जाता है।

प्रश्न 502 : गुरूकुलीय विद्यार्थी के भोजन, वस्त्र कैसे होते हैं ?

उत्तर : गुरूकुल के विद्यार्थियों का भोजन, शुद्ध, सात्विक तथा वस्त्र सभ्य, शिष्ट, आदर्श होते हैं।

www.thearyasamaj.org

व्यक्तित्व विकास

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व का संबंध वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों से है।

1. वंशानुक्रम – ये तत्व जन्मजात होते हैं जो व्यक्ति को अपने माता–पिता तथा पूर्वजों से मिलते हैं। इनमें अन्तःस्रावी ग्रन्थियों से स्रवित होने वाले हारमोन, स्नायुमण्डल, शारीरिक रचना, मन एवं बुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान है। आयुर्वेद के मतानुसार वात प्राकृतिवाले पुरूष चंचल स्वभाव, थोड़ा भोजन और बार–बार अधिक बोलने का स्वभाव, किसी भी कार्य को शीघ्र प्रारंभ वाले, शीघ्र ही दुःखी, भयभीत, आसक्त एवं विरक्त हो जाने वाले तथा अस्थिर स्वभाव वाले होते हैं। इनका स्वभाव प्रायः तामसिक होता है। जिन लोगों की पित्त प्राकृति है वे सुकुमार, गौरवर्ण, तीक्ष्ण, पराक्रमी, मध्यबल, मध्यबुद्धि एवं क्रोधी स्वभाव वाले होते हैं। इनकी प्रकृति रजोगुणी होती है। कफ प्रकृति युक्त लोग देखने में सुन्दर, धीरे से कार्य करने वाले, आलसी, क्षोभ से रहित, दृढ़ निश्चयी, सहनशील, भोगों से अनासक्त, दयालु एवं ज्ञान, बुद्धि, मेधा से सम्पन्न तथा सात्विक गुण वाले होते हैं। व्यक्तियों को ये गुण अपने पूर्वजन्म के कर्म अथवा वंश परम्परा से प्राप्त होते हैं।

2. वातावरण – व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है इसलिए परिवार, समाज, विद्यालय तथा वातावरण का उस पर प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। परिवार में माता – पिता, वृद्धजन तथा परिवार के अन्य सदस्यों का आचरण जैसा होगा, बालक उनका ही अनुकरण करेगा। जिस विद्यालय में वह शिक्षा ग्रहण करता है वहां के छात्र, अध्यापक, शिक्षा, खेलकूद आदि की सुव्यवस्था होने से विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन, संयम, परिश्रम करने की प्रवृत्ति एवं ज्ञान–विज्ञान में अभिरूचि इत्यादि गुण विकसित होते हैं। इनके अतिरिक्त आर्थिक परिस्थिति, सांस्कृतिक वातावरण, सामाजिक परिवेश, राजव्यवस्था एवं धार्मिक आस्था भी व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

3. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व – ऐसा व्यक्ति अपने में ही मस्त, एकान्तप्रिय, अल्पभाषी, लज्जाशील, साहित्यिक, आध्यात्मिक रूचिवाला, सत्य का अन्वेषक, तार्किक, भावुक, क्रोधी और शंकालु होता है।

4. बहिर्मुखी व्यक्तित्व – अत्यन्त सामाजिक, मिलनसार, बात करने में कुशल, मनोविनोदी, व्यवहारपटु, धैर्यवान, परिश्रमी, रूढ़िवादी, अधिकारप्रिय, स्वार्थी और आक्रामण गुणों वाला बहिर्मुखी व्यक्तिव कहलाता है। कुछ लोगों में इन दोनों गुणों का संमिश्रण होता है।

एक अच्छे व्यक्तित्व में निम्न विशेषताएं होती हैं –

www.thearyasamaj.org

1. आत्मचेतना (Self Consiousness)

आत्मचेतना वह शक्ति है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संबंध में जानने लगता है कि वह कौन है ? वह यह भी जान जाता है कि दूसरे व्यक्ति उसके विषय में क्या सोचते हैं। यही ज्ञान वास्तविक व्यवहारों को निर्धारित करता है। पशु तथा छोटे बालकों में आत्मचेतना नहीं होती इसलिए उनका व्यक्तित्व भी नहीं होता।

2. गत्यात्मकता (Dynamicity)

अच्छे व्यक्ति स्थिर या जड़बुद्धि नहीं होते। वे सदैव अपना तथा बाह्य स्थितियों का विश्लेषण करते रहते हैं तथा आवश्यकतानुसार अपने मूल्यों विचारों, धारणाओं तथा आदर्शों का परिवर्तन करते रहते हैं। इन परिवर्तनों का उद्देश्य सदैव विकासात्मक होता है। विकास की यह प्रक्रिया आजन्म चलती रहती है। किसी विचारक ने बहुत ही सुन्दर कहा है –

यस्यास्ति सर्वत्र गतिः स कस्मात् दारिद्र्यजातान् प्रसहन्ते दुःखान्। तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणाः क्षीरं जलं कापुरूषाः पिबन्ति।।

जिसकी सर्वत्र गति है वह दरिद्रता से उत्पन्न कष्टों को क्यों सहन करे ? यह कुआं मेरे बाप दादा का बनवाया हुआ है, यह कहते हुए उसका खारी जल कायर पुरूष ही पीते हैं, पुरूषार्थी नहीं। सिंह, सत्पुरूष और हस्ती इत्यादि उन्नति के लिए देश–देशान्तर छोड़कर सर्वत्र विचरण करते हैं और कव्वे तथा कायर पुरूष एक स्थान पर ही जीवन यापन करते रहते हैं।

3. शारीरिक संरचना (Physical Construction)

अच्छे व्यक्तित्व का तीसरा लक्षण अच्छी शारीरिक संरचना का होना हैं स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। शारीरिक सम्पूर्णता जब तक नहीं होगी तब तक व्यक्ति का व्यवहार भी सामान्य नहीं होता और न ही उसका विकास संतुलित रूप में होता है। प्रायः देखा जाता है कि विकालांग या दुर्बल व्यक्ति हीन भावना या कुण्ठा से ग्रस्त होते हैं।

4. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Heath)

व्यक्तित्व मनोदैहिक शक्तियों का संगठन हैं शारीरिक और मानसिक शक्तियों के समायोजन से ही व्यक्तित्व निखरता हैं अच्छे मानसिक स्वास्थ्य वाला व्यक्ति ही अपनी भावनाओं तथा संवेगों पर नियन्त्रण, संतुलित व्यवहार, तर्क, चिन्तन आदि भली भांति कर सकता है।

क्रमशः.....

www.thearyasamaj.org

बोधकथा :

दूरदर्शिता

गांव के पास से निकलती हुई एक छोटी सी नदी में अदूरदर्शी, दूरदर्शी एवं आलसी बाई नाम की तीन मछलियां रहती थीं।

एक दिन संध्याकाल के समय उस नदी के किनारे कुछ मछुआरे आये और आपस में बातचीत करने लगे।

संयोग से वो तीनों मछलियां उसी किनारे पर थीं। वे तीनों बड़े ध्यान से उन मछुआरों की बातें सुनने लगी।

उनमें से एक बोला – मित्रों ! इस स्थान पर नदी में काफी मछलियां हैं। हम सब कल यहां आकर जाल डालेगें। क्योंकि आज बहुत देर हो चुकी है, इसलिए कल ही जाल डालना अच्छा रहेगा।

इसके बाद वो सभी वहां से चले गये। उन मछुआरों के जाने के बाद दूरदर्शी नामक मछली ने सोचा – हम सबकी भलाई इसी में है कि आज ही हम यह जगह छोड़ दें। क्या पता कल ये मछुआरे आकर अपना जाल डाल दें और हम बेमौत मारे जाए, ऐसा विचार करते हुए उसने वह नदी उसी क्षण छोड़ने का निश्चय किया और नदी से निकलने वाली एक छोटी सी नहर में बहुत दूर निकल गयी।

दूसरी मछली जिसका नाम आलसी बाई था ने सोचा, अरे कोई जरूरी तो है नहीं कि ये मछुआरे लोग कल इसी जगह पर ही जाल डालें। यदि ये लोग कल आ ही गये, तो तब मैं परिस्थिति के अनुसार कोई निर्णय ले लूंगी।

तीसरी मछली अदूरदर्शी ने विचार किया कि – जो भाग्य में लिखा है वही होगा, मेरा भला अपने घर में ही है।

वह भी आलसी बाई के साथ वहीं रूकी रही।

दूसरे दिन सुबह ही वे सभी मछुआरे उसी स्थान पर आये और जाल डालना प्रारंभ कर दिया। उन मछुआरों के जाल में वो दोनों मछलियां जिनका नाम अदूरदर्शी एवं आलसी बाई था, पकड़ी गई। परिस्थिति देखकर आलसी बाई मछली ने तुरन्त ही मृतवत होने का ढ़ोंग कर लिया। आलसीबाई मछली को मृत जानकर उन मछुआरों ने उसे तालाब में ही फेंक दिया। यह उस मछली का भाग्य अच्छा था कि मरी हुई मछली का भोजन वो मछुआरे पकाते नहीं थे।

अदूरदर्शी मछली पकड़ी गई और वह उन मछुआरों के हाथ बेमौत मारी गयी।

इस कहानी से यह निष्कर्ष निकलता है कि, संसार में तीन तरह के व्यक्ति निवास करते हैं। पहले प्रकार के व्यक्ति दूरदर्शी मछली के समान तुरन्त निर्णय लेने वाले, दूसरे भविष्य व भाग्य पर भरोसा करके निर्णय लेने वाले (परन्तु भाग्य सदैव साथ नहीं देता) तथा तीसरे हाथ पर हाथ धरे रखने वाले। यह कहानी हमें यह भी बताती है कि हर व्यक्ति अपने भाग्य का विधाता स्वयं होता है और भाग्य के निर्माण का निर्णय भी स्वयं को ही करना होता है।

www.thearyasamaj.org

महर्षि की लेखनी से –

सन्यासी

जैसे अग्नि आप शुद्ध हुआ सबको शुद्ध करता है, वैसे सन्यासी लोग स्वयं पवित्र हुए सबको पवित्र करते हैं।

– ऋ. 7 | 13 | 2

सत्योपदेश ही सन्यासियों का ब्रह्मयज्ञ है। ब्रह्म की उपासना देवयज्ञ है। विज्ञानियों की प्रतिष्ठा करना पितृयज्ञ है। मूर्खों को ज्ञान–दान, सब प्राणियों पर अनुग्रह और उन्हें पीड़ा न देना भूतयज्ञ है। सब मनुष्यों के उपकार के लिए भ्रमण करना, अभिमान शून्यता और सत्योपदेश करने से सब मनुष्यों का सत्कार–अनुष्ठान अतिथियज्ञ है।

– **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वर्णाश्रमविषयः**

परमेश्वर से भिन्न किसी की उपासना न करे, न वेदविरूद्ध कुछ मानें, परमेश्वर के स्थान में सूक्ष्म वा स्थूल तथा जड़ और जीव को भी कभी न माने, परमेश्वर को सदा अपना स्वामी माने और आप सेवक बना रहे, वैसा ही उपदेश अन्य को भी किया करे।

– **संस्कारविधिः, संन्यासप्रकरणम्**

(सन्यासी) चाहे निन्दा हो चाहे प्रशंसा, चाहे मान हो चाहे अपमान, चाहे जीना हो चाहे मृत्यु, चाहे हानि हो चाहे लाभ, चाहे कोई प्रीति करे, चाहे वैर, बॉधे, चाहे अन्न पान, वस्त्र, स्थान न मिले वा मिले, चाहे शीत ऊष्ण कितना ही क्यों न हो, इत्यादि सबको सहने करे और अधर्म का खण्डन तथा धर्म का मण्डन सदा करता रहे, इससे परे उत्तम धर्म दूसरा किसी को न मानें।

– **सत्यार्थप्रकाश, एकादशसमुल्लास**

संस्कार

जिससे शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते है और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को उचित है।

– **संस्कारविधिः**

www.thearyasamaj.org

पुनः स्मरण –

स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारूप

प्रान्तीय सभा द्वारा ज्ञानवर्धक एक श्रेष्ठ योजना

मान्यवर,

आर्य समाज की मान्यता का आधार वेदादि शास्त्र हैं, आर्य समाज के सिद्धान्त पूर्णतः इन्हीं आर्ष ग्रंथों पर आधारित हैं। यह भी पूर्ण सत्य एवं सर्वमान्य है कि वेद और वैदिक साहित्य समाज में उपलब्ध समस्त विचारधाराओं से श्रेष्ठ व सत्य पर आधारित हैं।

महर्षि दयानन्द रचित ग्रंथों के पठन–पाठन में लेशमात्र भी वैदिक विचारधारा से हटकर कुछ नहीं है। जब तक इन ग्रंथों का आर्यजन स्वाध्याय करते रहे तब तक आर्य समाज की मान्यताओं में स्थायित्व व एक दृढ़ता थी, व्यक्ति समर्पित व पक्के मिशनरी थे। स्वाध्याय की कमी से व्यक्ति व परिवार आर्य विचारधारा के साथ नहीं जुड़ रहे हैं, आज शिथिलता अथवा बिखराव की स्थिति बनते जा रही है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती है कम से कम उनके रचित ग्रंथों की जानकारी और उनका पठन पाठन भी हमारी विचारधारा को तरोताजा बनाए रखता है। महर्षि के अनमोल तर्क संगत विचार पढ़कर दृढ़ता आती है। अपनी विचारधारा में दृढ़ता के लिए यह क्रम आर्यों में निरन्तर चलते रहना चाहिए।

इसी भावना से महर्षि की अनमोल रचना ऋग्वेदभाष्यभूमिका का प्रारंभ स्वाध्याय घर–घर में हो सके, इस हेतु डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, मुम्बई ने इस पुस्तक का क्रमबद्ध स्वाध्याय करने की दृष्टि से एक अत्यन्त प्रसंशनीय कार्य प्रारंभ किया। जिसमें अलग–अलग 10 भागों में प्रतिमाह ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के संबंध में जानकारी प्रेषित की जावेगी। इसका एक और बड़ा लाभ होगा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का स्वाध्याय व संग्रह हमारे परिवारों में हो जावेगा। इसके पष्चात सत्यार्थ प्रकाष, मनुस्मृति, संस्कार विधि, उपनिषद आदि के संबंध में यही क्रम प्रारंभ किया जावेगा।

इसकी उपयोगिता और रूची को देखते हुए **आगे एक माह के स्थान पर 15 दिन में प्रारंभ किया जा सकता है।** प्रतिमाह डाक न मिलने पर फोन से या पत्र से यथाषीघ्र सूचित करे ताकि पुनः व्यवस्था की जावें।

यह जानकारी छोटी सी पुस्तिका के रूप में होगी। इसके पीछे ही कुछ प्रश्न उल्लेखित होगें, जिनका उत्तर इसी पुस्तक में से प्राप्त हो जायेगा। स्वाध्याय का सरल रोचक और आकर्षक तरीका इससे अच्छा नहीं हो सकता है।

इसलिए प्रयास यह होना चाहिए कि यह योजना घर–घर में प्रत्येक सनातन धर्मी के पास एवं कम से कम प्रत्येक आर्य परिवार में पहुंचे। कृपया प्रत्येक आर्य परिवार को इसकी जानकारी देवें।

कृपया शीघ्र ही अपनी स्वीकृति नीचे दिए प्रारूप अनुसार धनराशि सहित निम्न पते पर प्रेषित करें।

स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम

आर्य समाज मन्दिर, महू जिला इन्दौर (म. प्र.) 453441

दूरभाष : 07324–273201, 226566, 9826655117

www.thearyasamaj.org

उद्देश्य

"वैदिक वाङ्मय के प्रतिरूचि जागृत करके उसके स्वाध्याय के लिये प्रेरित करना तथा तदनुकूल आचरण द्वारा मानव जीवन का लक्ष्य एवं कर्तव्य का बोध कराना।"

नियम

1. पाठ्यक्रम का **सत्र प्रत्येक वर्ष के जनवरी से दिसम्बर 1 वर्ष तक** होगा। 1 वर्ष पश्चात दूसरा पाठ्यक्रम प्रारंभ करेगें। अप्रेल या मई में परिणाम और पुरस्कारों की घोषणा तथा अगले पाठ्यक्रम की सूचना।

2. प्रत्येक अंक के अन्त में पांच प्रश्न होगें जिनका उत्तर अलग कागज पर लिखकर नाम व पता लिखकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कैम्प कार्यालय **आर्य समाज, लुनियापुरा, महू** पर प्रतिमाह भेजना होगा।

3. 80 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के तीन विजेताओं को प्रथम **तीन** पुरस्कार लक्की ड्रा के आधार पर प्रत्येक को **1100/–** का पारितोषिक। 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के **तीन** विजेताओं को प्रत्येक तीन को **501/–** का पारितोषिक। 50 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के **तीन** विजेताओं को प्रत्येक को **251/–** का पारितोषिक दिये जायेगें। 40 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विजेताओं को प्रमाण पत्र दिया जायेगा।

4. मुद्रण एवं डाक व्यय आदि हेतु पाठ्यक्रम का **वार्षिक शुल्क रू. 150/–** है। यह राशि इस फार्म के साथ भेजना आवश्यक है, यह राशि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कोष में नगद, चैक अथवा खाता क्रमांक 062510001576 देना बैंक, टी. टी. नगर, भोपाल में भेजी जा सकती है। उसकी जानकारी फार्म में भरकर प्रेषित करें।

5. प्रतियोगियों की आयु सीमा 15 से 25 वर्ष तक।

पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार जानकारी देवें।

1. मेरा नाम _____
2. पिता का नाम श्री _____
3. आयु. _____ शैक्षणिक योग्यता _____
4. ग्राम/शहर. _____ तहसील. _____

जिला _____ पिन कोड _____

मोबाईल नम्बर _____ अथवा दूरभाष नं. _____

प्रतियोगिता में राशि 150/– ..... के द्वारा भेजी है।

दिनांक..... हस्ताक्षर

www.thearyasamaj.org

बजट

बजट के बाद, संसद में पर्चा एक आया,
सदस्य ने उठाकर, सभापति की ओर बढ़ाया।
लिखा था महोदय, हर साल बजट में अन्याय होता है,
कानून की निगाह में, न कोई बड़ा, न छोटा है।

फिर, हमारे साथ ये सरासर क्यों अन्याय है।
हमें उपेक्षित किया, ये कहां का न्याय है।।

हम चोर है या डाकू, पर हैं भारतवासीं,
यहीं जन्में, यहीं पढ़े, यहीं के हैं निवासी ।

आरक्षण, के नाम पर, खजाना देश का लुटा रहे।
घोषणाओं से वोट बैंक अपनी जुटा रहे।

लुभावने बजट ने, सबको लुभाया है।
समझ नहीं सकें हमें क्यों भुलाया है।।

माना कि लूट या चोरी से हम बदनाम हैं,
पर ये धन्धा तो आज हुआ आम है।

वैसे ये सब हो रहा, सरकार की नाक के नीचे।
सफेद पोशों की करनी से, हम तो है बहुत पीछे।

हमारी बिरादरी के ही जो, माता राजनीति की शरण में आ गए।
भाग्य देखो उनका सब करने का लायसेंस वो पा गए।

उनको सारी सुख–सुविधा दी जाती है,
समाज में भी अच्छी भली ख्याती है।
ये हमारे मौसेरे भाई, खुलेआम सब करते हैं।
हम तो रात में, वे दिन में भी नहीं डरते हैं।।

www.thearyasamaj.org

फर्क इतना ही है कि हम दर–दर भटकते हैं,
पुलिस की नजरों में सदा खटकते है।
पकड़ने के डर से, बन्दी देना पड़ती हैं,
यहां सब बिकता है, ये भारत धरती है।।

हम बदनाम और दुस्चरित्र कहलाते हैं,
पर हमारे मौसेरे भाई यहां पुजवाते हैं।
ये सरासर कलंक और भेदभाव चल रहा,
एक देश में खुला अन्याय पल रहा।

उन्हें सम्मान के साथ, सब कुछ मिला है।
फिर हमसे क्या दुश्मनी या गिला है,
छूट, डिस्काउन्ट, आरक्षण, कर चोरों को माफी।
इनकम टैक्स की बढ़ाई सीमा, सस्ते किए चाय, सिगरेट, कॉफी।

तो फिर चोरी, डकैती हो या लूट ।
इसमें क्यो नहीं हैं छूट,
इसे करने में भी कुछ छूट दी जाए,
ताकि हमारी कौम भी राहत पाए।

हमारी मांग जायज व नेक हैं,
सारी बिरादरी इस पर ऐक है।
बजट में हमारे लिए भी प्रावधान लाना जरूरी है,
वर्ना विद्रोह करना फिर हमारी मजबूरी है।

इसलिए हम बजट का विरोध करते हैं,
एक दिन का धरना काली के सामने धरते हैं।

प्रजातन्त्र में हमारी ओर भी ध्यान दिया जावे।
बजट में सजा की छूट का, प्रावधान किया जावें।।

– प्रकाश आर्य, महू

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

– आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

कविता

आर्य समाज न होंती तो वेदों का मान कहां होता,
सबकुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।
सचमुच सद्गुण साथ न हो तो चिर गुण मान नहीं होता,
गुण गरिमा के भान बिना पूजित इन्सान नहीं होता,
जबतक ज्ञान रहे अनजाना तब तक भान नहीं होता,
लक्ष्य प्रधान हो तो कोई पुरूष प्रधान नहीं होता,
आर्य समाज नहीं होता तो वेदों का मान नहीं होता,
सबकुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।

यह मत समझों उनको प्रभु की प्रतिमाओं से प्यार नहीं
नाम 'मूलशंकर' की मूल में शंकर का अधिकार न था
पूजन तो स्वीकार था पोंगा पन्थ उन्हें स्वीकार न था
उनकी दृष्टि सुदृष्टि थी जिसमें सारे बिना बिस्तार था
केवल पत्थर का पुतला ही तो भगवान नहीं होता,
सबकुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।

बिना विचारे अन्धे होकर अन्धी भक्ति निभाते हैं,
वे बेचारे भेड़ चाल में चलकर मर जाते हैं,
जिज्ञासाओं की अन्तःस्थल तक जब खोज कराते हैं
तभी मूलशंकर से शंकर दयानन्द बन पाते हैं,
जब तक निष्ठा दृढ़ न बने तब तक सद्ज्ञान नहीं होता,
सबकुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।

धर्म कर्म की गतियां अपनी–अपनी राहों पर जाती हैं
राह भले हों भिन्न एक ही मंजिल पर पहुंचाती हैं।
स्वामी दयानन्द की बातें यही सार समझाती हैं,
समय काल की आवश्यकता सदा सफलता पाती हैं
कर्म महान न हों तो कर्ता कभी महान नहीं होता,
सबकुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।

www.thearyasamaj.org

धर्म का मर्म न जाना केवल धर्म–धर्म चिल्लाते हैं,
कर्तव्यों का बोध तो है पर कार्य नहीं कर पाते हैं,
जो पथ के दुख दुविधाओं, बाधाओं से घबराते हैं,
या सुख–सुविधाओं के लालच में तन–मन भरमाते हैं,
ऐसे निश्चय वालों का कुछ भी उत्थान नहीं होता,
सबकुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।

रूढ़िवादिता जिसे न भाये उसे दयानन्द कहते हैं,
जो सत्पथ पर बढ़ता जाये उसे दयानन्द कहते हैं
स्वयं दया में आनन्द पाये दुश्मन के भी प्राण बचाये,
सर्व स्व का बलिदान न हो तो सफल निदान नहीं होता।
सबकुछ होता लेकिन हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान नहीं होता।

– **काका हाथरसी**

।।ओ३म्।।

वर्ष प्रतिपदा, नव संवत्सर, आर्य समाज स्थापना दिवस
के अवसर पर
सभी आर्यजनों को हार्दिक शुभकामनाएं

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी
सभाप्रधान

प्रकाश आर्य
सभामन्त्री

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

विशेष नोट :– जिन सदस्यों की वैदिक रवि प्राप्त न होने की शिकायतें प्राप्त हो रही हैं, उनसे निवेदन है कि वे अपना पूर्ण व सही पता, मोबाईल नम्बर, पिन कोड नम्बर सहित "कार्यालय मन्त्री श्री शरद यादव, (मोबाईल नम्बर 9893140375, 07324–226566) आर्य समाज टी टी नगर, भदभदा रोड, भोपाल के पते पर भेजें।

www.thearyasamaj.org

वर्ष प्रतिपदा, नवसंवत्सर, आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर

– प्रकाश आर्य, महू

आर्य समाज असम्प्रदायिक सनातन धर्म विचारधारा का पोशक अन्धविश्वास और सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला एक संगठन है।

धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक मान्यताएं प्रायः महापुरूषों के विचारों, जीवनी या उनके उपदेशों पर आधारित है। इस प्रकार की विचारधाराओं से सम्बन्धित तथाकथित विचारधारा जिसे धर्म कहते हैं वे वास्तव में सम्प्रदाय है मत–मतान्तर है। आर्य समाज की मान्यता का आधार परमात्मा प्रदत्त ज्ञान वेद है, धर्म का आधार है इसी ईश्वरीय पवित्र ज्ञान, इसी वेद का प्रचार प्रसार आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। यह समस्त विश्व ईश्वर की सत्ता के अधीन है, समस्त प्राणीमात्र और ब्रह्माण्ड का स्वामी एक ही ईश्वर है। वह ईश्वर अनन्त, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक है वही हमारा माता–पिता, बन्धु, सखा, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। उसकी कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है। ईश्वर के संबंध में आर्य समाज की यह मान्यता है।

धर्म और परमात्मा के संबंध में व्याप्त अन्धविश्वास और अज्ञानता को दूर करने के लिए तथा सत्य सनातन धर्म के मूल सिद्धान्तों का परिचय जन साधारण को करवाने हेतु आर्य समाज की स्थापना की गई। आर्य समाज किसी व्यक्ति, महापुरूष या कुछ लोगों के द्वारा बनाई गई किसी नर्द विचारधारा वाला संगठन नहीं है। वर्ष प्रतिपदा सन् 1975 में इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द के द्वारा की गई।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने इसकी स्थापना के पूर्व ही यह स्पष्ट कर दिया था कि ईश्वरीय ज्ञान वेद में सबकुछ है, वह ज्ञान का पूर्ण भण्डार है, किसी जिन समाज विरोधी कार्यों का आर्य समाज ने विरोध किया उनमें प्रमुख हैं, सतिप्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, छुआछूत, जातिप्रथा, बलिप्रथा, मृतक श्राद्ध, गौ हत्या, एक के स्थान पर अनेक ईश्वर की मान्यता आदि है। जिनके लिए प्रयास किये उनमें से प्रमुख हैं, स्त्री जाति व शूद्रों को शिक्षा का अधिकार, वेद पढ़ने का सबको अधिकार, विधवा विवाह, शुद्धि संस्कार, हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए देश को आजादी के लिए, गौ रक्षा के लिए, विद्या के प्रचार के लिए, सनातन संस्कृति की रक्षा आदि है।

www.thearyasamaj.org

जिन समाज विरोधी कार्यों का आर्य समाज ने विरोध किया उनमें प्रमुख हैं, सतिप्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, छुआछूत, जातिप्रथा, बलिप्रथा, मृतक श्राद्ध, गौ हत्या, एक के स्थान पर अनेक ईश्वर की मान्यता आदि है। जिनके लिए प्रयास किये उनमें से प्रमुख हैं, स्त्री जाति व शूद्रों को शिक्षा का अधिकार, वेद पढ़ने का सबको अधिकार, विधवा विवाह, शुद्धि संस्कार, हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए देश को आजादी के लिए, गौ रक्षा के लिए, विद्या के प्रचार के लिए, सनातन संस्कृति की रक्षा आदि है।

आर्य समाज जिन सिद्धान्तों को मानता है उसमें हम अन्य मनुष्यों के बारे में भी सोचें, सबकी उन्नति का सन्देश महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियमों में दर्शाया है – **"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"**

ईश्वरीय ज्ञान सबके लिए है, इस संगठन का उद्देश्य भी जाति, भाषा, स्थान के कारण संकुचित न हो, इसलिए नियम बनाया – **"संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"** संसार में क्लेश का कारण अज्ञान है अज्ञानता के कारण ही मनुष्य का शोषण हो रहा है वह दुःखी है। समाज की इस महान कमी को दूर करने के लिए सबको दुःखों से छुटकारा दिलवाने के लिए नियम बनाया – "अविद्या का नाश और विद्या की उन्नति करनी चाहिए।"

धर्म पालन में प्रार्थना, उपासना, स्वाध्याय यह तो व्यक्तिगत उन्नति के लिए है ही किन्तु परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति अपने कर्मव्यों को करना भी प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। इस प्रकार धर्म का पूर्ण स्वरूप आर्य समाज की मान्यता है।

संसार में मानव संगठन, व्यक्ति, परिवार व समाज में तीन भागों में बंटा हुआ है। इन तीनों का ही घनिष्ट संबंध एक–दूसरे से है, एक–दूसरे को आपस में इनकी आवश्यकता सदा रही है, सदा रहेगी। इन तीनों की उन्नति से ही एक स्वस्थ व पूर्ण सुखी स्वरूप समाज का हो सकता है।

इसी भावना से आर्य समाज नियमों में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने का सन्देश दिया है।

आर्य समाज, समाज के प्रहरी के रूप में कार्यरत् संगठन है जो सामाजिक दोषों का विरोध और समस्त मानव को संगठित करने के लिए ईश्वर के ज्ञान वेद का प्रचारक है।

www.thearyasamaj.org

समाज की शान्ति व ज्वलन्त समस्या का समाधान केवल आर्य समाज की मान्यता के द्वारा ही संभव है, आज संसार विभिन्न समस्याओं, विवादों, घटनाओं और मनुष्य से मनुष्य के बढ़ते मन भेदों से परेशान हैं।

इन सबका कारण वैचारिक भिन्नता है। धर्म और ईश्वर के नाम पर समाज बंटा हुआ है। एक धर्म और एक ईश्वर के स्थान पर अनेक मत, मजहब, सम्प्रदायों ने धर्म व ईश्वर को बांट दिया। जो धर्म सबको एक करने का सन्देश देता है उसके नाम पर आगजनी, लूट, हत्यायें हो रही हैं। जो ईश्वर सबका एक ही पिता है, सबका वही एक रक्षक है उसके एक रूप को सम्प्रदाय व भिन्न–भिन्न विचारों ने अनेक करके समाज की आपस में दूरी बढ़ा दी।

दो सम्प्रदायों की एकता की छोड़ों, यहां तो एक ही सम्प्रदाय में भेद है। मुस्लिम, सिया, सुन्नी, ईसाई, प्रोटेस्टियन व रोमन केथोलिक, जैन श्वैताम्बर, दिगम्बर और हिन्दू समाज कितने हिस्सों में जाति में ईश्वर, पूजा पद्धति, भगवान, गुरूओं के नाम पर बंटा है, उसकी तो गिनती ही नहीं है।

क्या ये सभी मान्यताएं ईश्वर और धर्म के नाम पर एक हो सकेगी ? क्या इन अलग–अलग मान्यताओं के कारण मानव संगठित हो सकेगा ? क्या कभी संसार में इन विभिन्न विचारों के रहते हुए शान्ति स्थापित हो सकेगी ? क्या सर्वे भवन्तु सुखिनः का सन्देश पूर्ण हो सकेगा ?

इन सबका उत्तर है – कभी नहीं। क्यों ? तो इसका सीधा सा उत्तर है आज सनातन विचारधारा को छोड़कर जितनी भी विचारधाराएं धर्म और ईश्वर को लेकर समाज में प्रचलित है वे सभी मानव प्रदत्त हैं ? उनका उद्‌गत किसी मानवीय ज्ञान के आधार पर हुआ है। कोई महापुरूष ही उनके अस्तित्व का कारण है जैसे मुस्लिम सम्प्रदाय मोहम्मद सा. से क्रिश्चियन ईशा मसीह से, जैन महावीर स्वामी, बौद्ध गौतम बुद्ध, सिक्ख गुरूनानकदेव जी आदि–आदि।

इस प्रकार की मान्यता वाले या उनके अनुयायी अपने–अपने महापुरूषों को ही सबसे श्रेष्ठ मानते हैं उन पर अटूट विश्वास रखते हैं तभी तो वे उससे जुड़े हैं। वे अन्य किसी महापुरूष या मजहब की बात को स्वीकार नहीं करते। ऊपरी तौर पर भाषण, लेखों और मानवीय व्यवहारिक औपचारिकताओं के कारण भले ही यह प्रदर्शन करते हो कि वे एक है परन्तु वास्तविकता इससे भिन्न है। यदि एक है तो फिर अलग से अपनी पहचान क्यों रखता है फिर मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, गिरजाघर का अन्तर उसके जीवन में क्यों रहता है ?

www.thearyasamaj.org

वैदिक संस्कारों हेतु
पंडित राजगुरू शर्मा वैदिक छात्रावास महू
प्रवेश प्रारंभ

पंडित राजगुरू शर्मा वैदिक छात्रावास की स्थापना वर्ष 2093 को सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के कर कमलों द्वारा की गई थी। छात्रावास का उद्देश्य शासन के पाठयक्रम के साथ–साथ विद्यार्थियों को वैदिक संस्कारों से भी संस्कारित किया जा सके।

सर्वोत्तम ज्ञान का केन्द्र तो गुरूकुल ही हैं किन्तु सभी माता पिता गुरूकुल में बच्चों को नहीं भेज पाते हैं। इस छात्रावास के माध्यम से गुरूकुल के समकक्ष तो नहीं किन्तु छात्रावास में उसी प्रकार की दिनचर्या और शिक्षा छात्रों को प्रदान की जाती हैं।

अभी तक सैकड़ो छात्र इसमे अध्ययन कर चुके है उनमें से अधिकांश वे रहे जिनका आर्य परिवार से संबध नहीं था किन्तु एक निष्ठावान आर्य के रूप मे उनका निर्माण हुआ।

अभी तक छात्रावास की विशेषता यह रही कि अनेक दुर्व्यसनी बालकों के जीवन में बड़ा परिवर्तन आ कर वे सुयोग्य बने हैं।

विशेष कर आर्य परिवार के बालकों के लिए इसकी स्थापना की थी। प्रवेश हेतु आर्य परिवार के बालकों को प्राथमिकता दी जाती हैं। पढ़ाई हेतु विद्यार्थी आर्य समाज द्वारा संचालित विद्यालय जो 12 वी (कॉमर्स) तक हैं। अपने बालको को प्रवेश दिलवाकर उन्हे वैदिक संस्कारों से परिचित करवावे। **कक्षा 3 री से या 9 वर्ष के छात्र से प्रवेश प्रारंभ किया जाता हैं।**

छात्रावास की दिनचर्या

0 प्रातः 5 बजे जागरण (ऋतु अनुसार समय मे परिवर्तन)

0 प्रातःकालीन मन्त्रपाठ 0 भ्रमण व्यायाम, स्नान आदि से 7.30 तक

0 संध्या, यज्ञ प्रातः 8 बजे तक

0 कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थी विद्यालय प्रस्थान

0 कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए विद्यालयीन दैनिक कार्य एवं अभ्यास प्रातः 11 बजे तक

0 विद्यालय जाने की तैयारी व भोजन 11.45 तक 0 विद्यालय 12 से 5 तक

0 सायंकालीन सत्र में भ्रमण, क्रीड़ा, अन्य आवश्यक कार्य 5 से 6.30 तक

0 संध्या उपदेश 6.45 से 7.30 तक

0 भोजन, भ्रमण, पढ़ाई 0 रात्रि शयन मन्त्रपाठ

सुविधाएं : प्रातः राष गाय का दूध, शुद्ध सात्विक भोजन आदि। वैदिक संस्कारों के साथ साथ अंग्रेजी, विज्ञान और कम्प्यूटर का भी विशेष प्रशिक्षण।

www.thearyasamaj.org

श्री सुरेशजी शास्त्री, सुरेश आर्य, विनोद आर्य द्वारा प्रचार कार्य मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा माह मार्च मे वेद प्रचार कार्यक्रम

1. दिनांक 3/3/17 ग्रांम –बडूद स्थान शिवमन्दिर रात्रिकालीन सभा
2. दिनांक 4/3/17 ग्राम –बडूद प्रातः योग विषय मे प्रवचन समय 6 से 7 तक
3. दिनांक 4/3/17 श्री महेश प्रजापति जी के घर सनावद प्रातः 9 से 11 भजन प्रवचन
4. दिनांक 4/3/17 ग्राम खंगवाड़ा रात्रिकालिन सभा स्थान राममन्दिर
5. दिनांक 5/3/17 श्री जगदीश जी आर्य सनावद प्रातः 8 से 10 भजन प्रवचन
6. दिनांक 5/3/17 ग्राम बावड़िया रात्रि सभा स्थान श्री राम मन्दिर
7. दिनांक 6/3/17 ग्राम बावड़िया श्री अनिल आर्य प्रातः 8 से 10 भजन प्रवचन
8. दिनांक 6/3/17 ग्राम सुलगांव स्थान श्री राममन्दिर रात्रि सभा
9. दिनांक 7/3/17 ग्राम कसरावद स्थान बड़ी माता मन्दिर प्रातः 8 से 11 यज्ञ, भजन, प्रवचन
10. दिनांक 7/3/17 ग्राम कसरावद स्थान बड़ी माता मन्दिर रात्रि सभा
11. दिनांक
12. दिनांक 8/3/17 ग्राम मुल्ठान माली धर्मशाला प्रातः भजन, प्रवचन
13. दिनांक 8/3/17 ग्राम मुल्ठान माली धर्मशाला रात्रि सभा भजन, प्रवचन
14. दिनांक 9/3/17 ग्राम बिटनेरा माली धर्मशाला प्रातः यज्ञ भजन, प्रवचन
15. दिनांक 9/3/17 ग्राम बिटनेरा माली धर्मशाला रात्रि सभा भजन, प्रवचन

इसके अतिरिक्त सांवेर आष्टा, देवास, इन्दौर, रतलाम, मे भी श्री सुरेश जी शास्त्री द्वारा प्रचार कार्य किया गया।

www.thearyasamaj.org

विचार टी. वी. फाउण्डेशन द्वारा टी. वी. स्क्रीन का आचार्य वागीश जी द्वारा अनावरण

इन्दौर 12–02–2017 रविवार प्रातः 9 बजे आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर में रविवारीय यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान ओजस्वी वक्ता आचार्य वागीश जी, एटा उत्तर प्रदेश का विशेष उद्‌बोधन रहा। सर्वप्रथम साप्ताहिक कार्यक्रम अनुसार देव यज्ञ, आचार्य चन्द्रमणि याज्ञिक द्वारा सम्पन्न किया गया। यज्ञोपरान्त विचार टी वी फाउण्डेशन द्वारा चलाए जा रहे चलचित्र से चरित्र निर्माण को मूर्त रूप देने के लिए टी वी स्क्रीन का उद्‌घाटन आचार्य वागीश जी के कर कमलों द्वारा फीता काटकर एवं रिमोर्ट दबाकर किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा – आज के इस भौतिक युग में जहां मनुष्य भौतिक उन्नति के शिखर पर पहुंचने की पुरजोर प्रयास करता है, वहीं आध्यात्मिकता से कौसों दूर होता जा रहा है। मनुष्य जीवन का सर्वांगीण विकास मात्र भौतिकता से नहीं, बल्कि आध्यात्मिकता से होती है। आज का युग विज्ञान का युग है, हर रोज नए विज्ञान की ,खोजें हो रही हैं, लेकिन मनुष्य स्वयं की खोज से दूर हो गया है। उन्होंने कहा विचार टी वी फाउण्डेशन ने जो विज्ञान के द्वारा वैदिक विचारों को दूर तक जन जन तक फैलाने का जो कार्य किया है। आज के समय में अत्यन्त श्रेयष्कर है। आपकी एवं विचार टी वी चैनल्स पदाधिकारियों को साधुवाद धन्यवाद दे रहा हूं।

इस अवसर पर विचार फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र पोहार ने कहा कि विचार टी वी के माध्यम से अपने वैदिक विचारों को हम जन जन तक, घर तक पहुंचाने का क्रम रखा जाएगा। इसके लिए मन्दिर में आए सभी प्रबुद्ध लोगों से आह्वान किया गया कि ज्यादा से ज्यादा हम अपने संस्कारों को अपने बच्चों को दे सकें।

इस अवसर पर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के इन्दौर संभाग के उपप्रधान श्री गोविन्दराम आर्य ने कहा – कि आज प्रातःकाल से रात्रि तक न जाने कितने ही टी वी चैनल्स द्वारा तरह – तरह के विचारों को परोसा जा रहा है, जिससे हमारा समाज, हमारी संस्कृति, हमारे बच्चों को चारित्रिक पतन हो रहा है। अतः इसी उद्‌देश्य को ध्यान में रखते हुए

www.thearyasamaj.org

हम इस विज्ञान के युग में विज्ञान द्वारा ही अपने श्रेष्ठ विद्वानों के विचारों को टी वी द्वारा तथा अपने महापुरूष देश भक्त, राष्ट्र भक्त के विचारों को हम दिखा सकें और समाज को नई दिशा दे सकते हैं। अतः मैं आर्य समाज मल्हारगंज के मन्त्री डॉ. विनोद अहलुवालिया एवं प्रधान डॉ. दक्षदेवजी ने आचार्य वागीश जी का हृदय से आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर अजय रैनीवाल, सुरेश सोनी, उमेश गुप्ता, अखिलेशचन्द्र शर्मा, श्री गोविन्दराम आर्य, भूपेन्द्र पोहार, सुश्री मनोरमा साहू, सुश्री सुशीला शर्मा, प्रगति शर्मा एवं श्रीमती विमला गौड़ आदि उपस्थित थे।

श्री महेशचन्द्र शर्मा भोपाल के यहां ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

श्री महेशचन्द्र शर्मा एवं श्रीमती राकेश शर्मा के द्वारा पूर्व मे तीन वेदो से यज्ञ करवा चुके हैं। ऋग्वेद के मन्त्रो से 7 दिवसीय यज्ञ दिनांक 27 फरवरी से 5 मार्च 2017 तक सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम में स्वामी ऋतस्पती जी, स्वामी ओमव्रत जी, डॉ. पवित्रा आचार्या, श्री अशोक जी शास्त्री देहली, आदि विद्वान उपस्थित हुए। यज्ञ मे मन्त्रपाठ कन्या गुरूकुल सासनी की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम मे सभा मंत्री प्रकाश आर्य जी, श्री अतुल वर्मा, श्री दलवीर सिंह राघव, श्री आर. एस. चौहान, माता तपेश्वरी, संजू आर्य, श्री गुप्ता, श्री श्रीवास्तव तथा अनेक आर्य सदस्य तथा नगर वासी उपस्थित थे।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

www.thearyasamaj.org

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है. ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना ■ सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी

www.thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)